om 6 delhi 1 A B C_Page 1 and 2 16/06/2015 17:40 Page 9

कथा सरिता

बदलें दृष्टि

एक धनी व्यक्ति था, जिसे आँखों में दर्द की शिकायत थी। कभी-कभी तो यह दर्द इतना हो जाता कि वह सहन हीं नहीं कर पाता। उसने कई डॉक्टरों, आयुर्वेदाचार्यों और हकीमों से इलाज कराया। वह ढ़ेर सारी दवाइयां खा चुका था और सैकड़ों इंजेक्शन उसे लगाए जा चुके थे, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। दर्द कम होने की बजाय बढ़ता जा रहा था।

आखिर में उसे एक भिक्षु का पता चला, जो ऐसे रोगियों का इलाज करने के लिए ख्यात था। धनी व्यक्ति ने भिक्षु को संदेश भेजकर निवेदन किया कि वे आकर उनके रोग का निदान कर उसका इलाज बताएं। भिक्षु उसके घर आया और पूरी सावधानी से उसका परीक्षण किया। उसके बाद उसने कहा कि कुछ दिनों के लिए उसे केवल हरे रंग पर अपनी आँखों को केंद्रित करना चाहिए। सावधानी बरती जाए कि आँखें हरे रंग के अलावा कोई अन्य रंग न देख पाएं। नुस्खा तो बड़ा अजीब था, लेकिन कहते हैं न कि मरता क्या न करता सो धनी व्यक्ति ने इसे भी आज़माने का मन बना लिया। उस धनपति ने पेंटरों के एक समूह को बुलाकर बड़ी मात्रा में हरा पेंट खरीदकर हर उस चीज़ को हरे रंग में रंग देने को कहा, जिस पर उसकी दृष्टि पड़ सकती थी। उसके आदेश का पालन कर उसके आवास और उसके आस-पास की सारी चीज़ों को हरे रंग में रंग दिया गया। कुछ दिनों बाद जब भिक्षु उससे मिलने आया तो धनपति के सेवक हरे रंग की बाल्टियां लेकर दौड़े ताकि उनके मालिक की नज़र भिक्षु के गेरुए वस्त्र पर न पड़े।

यह देखकर भिक्षु ने उन्हें रोका और करुणा से मुस्कराकर कहा, `इतनी ज़हमत उठाने की बजाय यदि तुम लोगों ने हरे रंग का चश्मा अपने मालिक को पहना दिया होता तो इसमें मामूली खर्च आता। ये सारी दीवारें, वृक्ष, घर के बर्तन व अन्य कीमती सामान बच जाते। तुम अपने मालिक की काफी संपत्ति इस तरह बर्बाद होने से बचा लेते। आप पूरी दुनिया को अपने रंग में नहीं रंग सकते।' दुनिया को बदलने की कोशिश करने से अच्छा है कि हम अपनी दृष्टि बदलें। फिर दुनिया हमें वैसी ही नज़र आएगी जैसी हम चाहते हैं।

मिथ्याभिमान

चक्रवर्ती सम्राट भरत की धारणा थी कि वे समस्त भूमण्डल के प्रथम चक्रवर्ती हैं-कम से कम वे ऐसे प्रथम चक्रवर्ती हैं, जो वृषभाचल पर पहुँच सके हैं। वे उस पर्वत के शिखर पर अपना नाम अंकित करना चाहते थे। उनकी धारणा थी कि यहाँ उनका यह पहला नाम होगा। शिखर पर पहुँच कर भरत के पैर ठिठक गये। उन्होंने ऊपर से नीचे तक पर्वत के शिखर को भलीभांति देखा। जहाँ तक वे जा सकते थे, शिखर की अन्य दिशाओं में गये। शिखर पर इतने नाम अंकित थे कि कहीं भी एक नाम और लिखा जा सके, इतना स्थान नहीं था। लिखे हुए नामों में से एक भी ऐसा नाम नहीं था, जो चक्रवर्ती का नाम न हो।

भरत खिन्न हो गये। उनका अभिमान कितना मिथ्या था। उन्होंने विवश होकर वहाँ एक नाम मिटवा दिया और उस स्थान पर अपना नाम अंकित कराया; किंतु लौटने पर राजपुरोहित ने कहा-`राजन्! आपने नाम मिटाकर नाम लिखने की परंपरा प्रारंभ कर दी। कौन कह सकता है कि वहाँ आपका नाम कौन कब मिटा देगा।'

लोभ का दुष्परिणाम

प्राचीन काल में सृंजय नाम के एक नरेश थे। उनके कोई पुत्र नहीं था, केवल एक कन्या थी। पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से उन्होंने वेदज्ञ ब्राह्मणों की सेवा प्रारंभ की। राजा के दान एवं सम्मान से संतुष्ट होकर ब्राह्मणों ने देवर्षि नारद से राजा के पुत्र होने की प्रार्थना की। वे उन दिनों राजा सृंजय के ही अतिथि थे। ब्राह्मणों की प्रार्थना से द्रवित होकर देवर्षि ने राजा से कहा-`तुम कैसा पुत्र चाहते हो?'

अब राजा सृंजय के मन में लोभ आया। उन्होंने प्रार्थना की-`आप मुझे ऐसा पुत्र होने का वरदान दें जो सुंदर हो, स्वस्थ हो, गुणवान हो तथा उसके मल-मूत्र, थूक-कफ आदि स्वर्णमय हो।'

देवर्षि ने कुछ सोचकर `एवमस्तु' कह दिया। उनके वरदान के अनुसार राजा को थोड़े दिन में पुत्र प्राप्त हुआ। उस पुत्र का नाम राजा ने सुवर्णष्ठीवी रखा। अब सृंजय के धन का क्या ठिकाना था? उनके पुत्र का थूक तथा मल-मूत्र भी स्वर्ण होता था। राजा ने अपने राजभवन के सब पात्र, आसन आदि स्वर्ण के बना लिये। इसके अनन्तर उन्होंने पूरा राजभवन ही स्वर्ण का बनवाया। उसमें दीवार, खंभे, छत तथा भूमि आदि सब सोने की थी। राजा के पुत्र सुवर्णष्ठीवी का समाचार सारे देश में फैल गया। दूर-दूर से लोग उसे देखने आने लगे। डाकुओं ने भी यह समाचार पाया। उनके अनेक दल परस्पर मिलकर उस राजकुमार को हरण करने का प्रयत्न करने लगे। अवसर पाकर एक रात दस्यु राजभवन में घुस आये और राजकुमार को उठा ले गये।

वन में पहुँचने पर दस्युओं में विवाद हो गया। अधिक समय तक राजकुमार को जीवित छिपाये रखना अत्यंत कठिन था। सबने निश्चय किया कि सुवर्णष्ठीवी को मारकर जो स्वर्ण मिले, उसे परस्पर बाँट लिया जाये। उन निर्दयी दस्युओं ने राजकुमार के टुकड़े कर डाले; किंतु उसके शरीर से उन्हें एक रत्ती सोना भी नहीं मिला।

लोभ के वश होकर राजा सृंजय ने ऐसा पुत्र मांगा कि उसकी रक्षा अशक्य हो गयी। उन्हें पुत्र शोक सहन करना पड़ा। लोभवश डाकुओं ने राजकुमार की हत्या कर दी। केवल पाप के भागी हुए वे और राजकोप के भाजन भी।

सादड़ी-राज.। पशुपालन मंत्री ओटाराम देवासी से ज्ञानचर्चा के बाद समूह चित्र में ब्र.कु.शुचीता, ब्र.कु.नमीता व आस्ट्रेलिया से ब्र.कु. सेमदादा।

बठिंडा-पंजाब। नवनिर्मित 'ओमशान्ति भावन' का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अमीर चन्द। साथ हैं ब्र.कु. कैलाश, ब्र.कु. सुदेश, ब्र.कु. अरूण , ब्र.कु. मधु व ब्र.कु. शीतल।

किनोर-हि.प्र.। 'ग्राम विकास अभियान' के दौरान बौद्ध धर्म गुरू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सचिन।

टिब्बी-राज.। शिव अवतरण रथ यात्रा के उद्घाटन कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए एस.डी.एम. महेन्द्र चौधरी। साथ हैं ब्र.कु.निलिमा, ब्र.कु.अनिता व अन्य।

हनुमानगढ़ जंक्शन-राज.। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए दायें से भाजपा अध्यक्ष अमित साहू, सरस्वती बी.एड कॉलेज के प्रिन्सीपल राजपाल जी, ब्र.कु. रामप्रकाश, सिंचाई विभाग अभियन्ता कृष्ण लाल जाखड़ व ब्र.कु. शीला।

नाभा-पंजाब। वित्त मंत्री परमिंदर सिंह ढ़िंडसा, विधायक पवन गर्ग, ए.डी.सी. विनोद कुमार व कृषि उत्पादक अशोक कुमार बंसल को आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. गुलशन। साथ हैं ब्र.कु. बृज तथा अन्य।

तत्तापानी-शिमला(हि.प्र.)। मुख्य संसदीय सचिव मन्सा राम को सात दिवसीय आध्यात्मिक कोर्स के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुंतला। साथ हैं प्रधान कुंदन लाल, ब्र.कु. उत्तम तथा अन्य।

सुनाम-पंजाब। विक्रम संवत 2072 के उपलक्ष में अग्रवाल सभा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं नगर काउन्सिल के प्रधान भागीरथ गीरा, रेवा छाहडीया, हरदेव हंजर, ब्र.कु. मीरा बहन, डॉ. सिगला एवं अन्य।